

# दीपक



“तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग  
के लिये उजियाला है।”



भजन संहिता 119:105

# दीपक

तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये  
उजियाला है। भजन संहिता 119:105

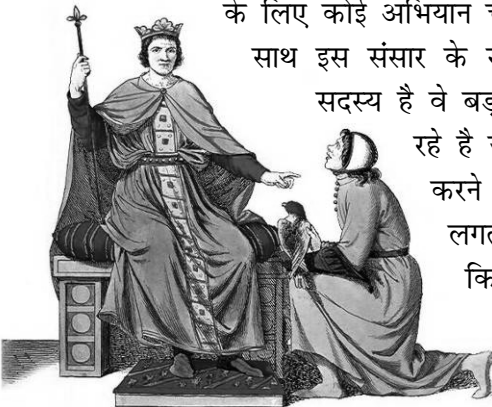
## मसीह के राजदूत (Ambassadors for Christ)

आज हम इस तरह के संसार में रह रहे हैं कि हम आसानी से ऐसे सांसारिक मामलों में फंस जाते हैं जिनके प्रति हम सावधान नहीं रहते हैं। हमें लूत के उदाहरण पर ध्यान देना चाहिये, जो दुष्ट लोगों की गन्दी बातचीत से परेशान था। पतरस हमें बताता है कि लूत, “उन के बीच में रहते हुए, और उनके अधर्म के कामों को देख देखकर, और सुन सुनकर, हर दिन अपने मन को पीड़ित करता था।” (2 पतरस 2:8)

पौलुस कहता है कि हमारा युद्ध इस संसार के “अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है।” (इफिसियों 6:12)

उच्च पदों की दुष्टता आज भी उतनी ही सत्य है जितनी यह पौलुस के समय में थी और यह भी एक कारण है कि हम मसीह के सैनिक होने के कारण इस दुनिया के मामलों में सम्मिलित नहीं होते हैं।

हमारे सदस्य ने पिछले किसी चुनाव में हिस्सा नहीं लिया। जब प्रभु यीशु मसीह लोहे के डण्डे के साथ इस संसार पर राज्य करने आयेंगे तो उन्हें अपना शासन स्थापित करने के लिए कोई अभियान चलाने की आवश्यकता नहीं होगी, वे शक्ति के साथ इस संसार के राज्यों को ले लेंगे। आज उनकी पार्टी के जो सदस्य हैं वे बड़ी ही शान्ति के साथ उन लोगों को तैयार कर रहे हैं जो प्रभु यीशु मसीह के आने पर उनकी शासन करने वाली पार्टी के सदस्य होंगे। यह अकल्पनीय लगता है, कि मसीह की पार्टी के विश्वासी सदस्य किसी ऐसी दूसरी राजनैतिक पार्टी में हिस्सा ले सकते हैं जिसको मसीह आने पर गिरा देगा।



एक ही समय पर दो राष्ट्रों की सेवा करना असम्भव है। यदि हम मसीह के सैनिक हैं तो हम किसी दूसरे सेनापति की सेवा या उसको चुने जाने में सहायता नहीं कर सकते हैं। यदि हम एक स्वर्गीय राष्ट्र को खोजते हैं तो हमें मान लेना चाहिये कि हम “पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं।” (इब्रानियों 11:13) जैसे हमारे विश्वासी पुरखों ने मान लिया और वे विश्वास ही की दशा में मर गये।

पौलुस बताता है कि “हम मसीह के राजदूत हैं।” (2 कुरिन्थियों 5:20) हम जानते हैं कि एक राजदूत जब परदेश में रहता है तो उस देश के कानून का बड़ी ही सावधानी से पालन करता है लेकिन वह एक पल के लिए भी उस देश के आन्तरिक राजनैतिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता है। उसको राजनैतिक मामलों से दूर रहते हुए भी, जो पार्टी सत्ता में है उसके नियमों का पालन करना चाहिये और उसे हमेशा याद रखना चाहिये कि वह जिस देश में रह रहा है वह वहां का निवासी नहीं है बल्कि अपने देश के प्रतिनिधि के रूप में वहाँ रह रहा है। हम इस संसार के नहीं हैं। और इसलिए पौलुस हमें राजदूत कहता है। यीशु ने कहा, “यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रेम रखता; परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, वरन् मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया हैं, इसी लिये संसार तुम से बैर रखता हैं।” (यूहन्ना 15:19)

यहोशू ने अपने लोगों को बताया कि, “यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे।” (यहोशू 24:15) यहाँ यहोशू ने अमालेकीयों के विषय में यह बात कही, हम अमालेकीयों के स्थान पर आज की गणतांत्रिक और लोकतान्त्रिक पार्टियों को रख सकते हैं। अमोस एक प्रश्न पूछता है कि, “यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों; तो क्या वे एक संग चल सकेंगे?” (अमोस 3:3) तो क्या एक मसीह भाई या बहन इस संसार के साथ चल सकता है? मसीह का मंच, आज के राजनैतिक अखाडें में नहीं मिल सकता है। हमें यहोशू के साथ कहना चाहिये कि, “मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा।” (यहोशू 24:15)

वे सब लोग जो यीशु के आने की प्रतिक्षा कर रहे हैं, वे इस संसार के राज्यों में अपने आप को व्यस्त करने से इंकार करेंगे क्योंकि यीशु ने उन्हें “वध होकर अपने लहू से हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है।” (प्रकाशितवाक्य 5:9) और उन्हें “परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।” (प्रकाशितवाक्य 5:10)

पौलुस पूछता है कि, “धार्मिता और अधर्म का क्या मेल-जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी

के साथ अविश्वासी का क्या नाता?... इसलिए प्रभु कहता है, 'उनके बीच में से निकलो और अलग रहो।'" (2 कुरिन्थियों 6:14-17)

सत्य यही है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर मनुष्यों के इन राज्यों में शासन कर रहा है और जिसको भी वह चाहता है उसी को यह सत्ता सौंप देगा, लेकिन इसके लिये उसको हमारे मतदान की सहायता नहीं चाहिये और न ही हम यह जानते हैं कि वह किसको निर्धारित करेंगा या किसको सत्ता से हटायेगा। "आज आप चुन ले कि आप किसकी सेवा करेंगे।" (यहोशू 24:15)

'मसीह के राजदूत' (Ambassadors for Christ) is taken from 'Minute Meditations' by Robert J. Lloyd

## इस्त्राएल से सम्बन्धित भविष्यवाणी (Prophecy concerning Israel)

बाईबल की अधिकांश भविष्यवाणियां परमेश्वर के लोगों और परमेश्वर की भूमि से सम्बन्धित हैं। उनमें से बहुत सी भविष्यवाणियां पूरी हो चुकी हैं। भविष्यवाणियों के पूरे होने से यह बात निश्चित हो जाती है कि ये भविष्यवाणियां परमेश्वर की प्रेरणा से की गयीं और यह कि परमेश्वर दुनिया में काम कर रहा है।

मुख्य पद: यहेजकेल 37:1-14, 24-28

यहेजकेल ने लगभग 590 ईसा पूर्व, जब इस्त्राएल बाबुल की बन्धुवाई में था, उस समय इस्त्राएल के विषय में भविष्यवाणी की थी।

उसने इस्त्राएल के विषय में बहुत सी भविष्यवाणियां की थी।



उनमें से एक भविष्यवाणी हड्डियों के सपने के द्वारा की गयी और यह ऐसी भविष्यवाणी है जिसकी व्याख्या बहुत ही अच्छी तरह से की गयी है।

- 1- इस सपने की मुख्य बातों को संक्षिप्त में लिखिए।
- 2- भविष्यवाणी का कौन सा भाग पूरी हुआ?
- 3- भविष्यवाणी का शेष भाग कब पूरा होने की आशा है?
- 4- जब परमेश्वर कहता है कि, “मैं तुम में सांस समाऊंगा और तुम जिओगे” तो इसका क्या अर्थ है?
- 5- यहजकेल 37:24-28 और लूका 1:30-33 में कितनी समानता है?

इस्राएल का इतिहास	
1400 ईसापूर्व	इस्राएल ने कनान पर चढ़ाई कर उसको जीत लिया और एक राष्ट्र के रूप में गठित हुआ।
1000 ईसापूर्व	राजा दाऊद
605 ईसापूर्व	यहूदियों को बंधुआई में बाबुल ले जाया गया।
538 ईसापूर्व	यहूदी येरूशलेम में वापिस आये और शहर को बनाया।
70 ईसवी	रोमियों ने येरूशलेम पर कब्जा किया। यहूदी सारी दुनिया में तितर-बितर हो गये।
1882 ईसवी	रूस में सामूहिक हत्याकाण्ड के परिणामस्वरूप यहूदियों की वापिसी की पहली लहर।
1897 ईसवी	स्वीजरलैण्ड के बेसेल में पहली सिय्योनी कांग्रेस
1900 ईसवी	तुर्की के अधिपत्य में ; पिलिस्तिन में मुट्ठी भर यहूदी
1904 ईसवी	यहूदियों की वापिसी की दूसरी लहर।
1917 ईसवी	ब्रिटिश का पिलिस्तिन पर कब्जा; यहूदी ने वहां जाना शुरू किया।
1945-1948 ईसवी	द्वितीय विश्व युद्ध में बचे हुए यहूदी पिलिस्तिन में चले गये।
1948 ईसवी	इस्राएल राज्य का गठन
1948 ईसवी	अरब देशों के साथ बहुत से युद्ध; इस्राएल ने अपनी स्वतन्त्रता बनाये रखी; बड़ी संख्या में यहूदी वापिस आये।
1994 ईसवी	अरब देशों के साथ शान्ति का समझौता

## इस्त्राएल के विषय में कुछ भविष्यवाणियां

1. इस्त्राएल राष्ट्र के जन्म की भविष्यवाणी परमेश्वर के द्वारा अब्राहम से की गयी थी

उत्पत्ति 15

2000 ईसा पूर्व

अब्राहम के वंशजों के द्वारा यह भविष्यवाणी पूरी हुयी।

2. इस्त्राएल के अनाज्ञाकारी होने, तितर बितर होने, संरक्षण और पुर्नगठित होने की भविष्यवाणी मूसा के द्वारा की गयी।

व्यवस्थाविवरण 28

1500 ईसा पूर्व

पूरी हुयी: 605 ईसा पूर्व बाबुल की बंधुवाई में गये, 538 ईसा पूर्व वापिस अपनी भूमि में आये।

पूरी हुयी: 70 ईसवी में तितर-बितर हुए, 20 वीं शताब्दी में वापिस अपनी भूमि में आये, 1948 में राष्ट्र पुर्नगठित हुआ।

3. इस्त्राएल लगातार परमेश्वर के अस्तित्व का एक गवाह रहा।

700 ईसा पूर्व

यशायाह 43: 1-2, 10-12

4. विश्वभर में तितर बितर होने के बाद भी इस्त्राएल संरक्षित रहा।

यिर्मयाह 30:10-11; 31:10

600 ईसा पूर्व

पूरी हुयी: यहूदियों का सम्पूर्ण नाश करने के बहुत से प्रयास किये गये लेकिन वे फिर भी बचे रहे, जैसे - स्पेन के अत्याचार के परीक्षण, रूस का सामूहिक हत्याकाण्ड, नॉजीयों के द्वारा दी गयी बलि। सम्पूर्ण इतिहास में हम देखते हैं कि किस प्रकार से परमेश्वर ने अपने बचे हुए लोगों को संरक्षित किया।

5. वे अपनी भूमि में वापिस आयेंगे और येरूशलेम पर उनका नियंत्रण होगा।

लूका 21:24-31

30 ईसवी

पूरी हुयी: 1948 में इस्त्राएल राष्ट्र फिर से गठित हुआ, 1967 में येरूशलेम पर उनका पुनः अधिकार हो गया।

## इस्त्राएल के विषय में भविष्यवाणियां

यहेजकेल 37 में दी गयी यह भविष्यवाणी, इस्त्राएल के विषय में विस्तारपूर्वक की गयी, दर्जनों भविष्यवाणियों में से एक है। किसी दूसरे राष्ट्र की तुलना में इस्त्राएल के विषय में अधिक भविष्यवाणियां की गयी हैं, ऐसा इसलिए है क्योंकि यहूदी परमेश्वर के विशेष लोग हैं। इस्त्राएल के इतिहास को पहले से ही बता दिया गया था और इसमें 20वीं शताब्दी में घटित घटनाएँ भी शामिल थीं। इस्त्राएल के लोगों, यहूदियों, का अस्तित्व और बाईबल में वर्णित भूमि में उनके राष्ट्र का अस्तित्व, इस बात के प्रमाण हैं कि बाईबल परमेश्वर के द्वारा प्रेरित है।

सब भविष्यवक्ताओं के द्वारा परमेश्वर ने इस बात को दोहराया कि वह पुराने विश्वासी लोगों से की गयी प्रतिज्ञाओं को याद रखेगा। उनकी दुष्टता के बाद भी, अन्त में, वह उनको उनकी अपनी भूमि में लेकर आयेगा। जैसे यिर्मयाह 30:3; यहजकेल 36:22-24।

विश्व के मध्य पूर्व क्षेत्र की स्थिति बहुत ही जटिल है क्योंकि दोनों यहूदी और अरबी लोग हजारों वर्षों से वहाँ हैं, दोनों ही अब्राहम के वंशज हैं, और दोनों ने ही परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को प्राप्त किया। लेकिन तो भी, परमेश्वर ने इसे साफ रीति से बताया है कि इस्त्राएल की भूमि यहूदियों की है (उदाहरण के लिए ओबद्याह की पुस्तक देखें)।

मध्य पूर्व में शान्ति के सारे मानवीय प्रयास शीघ्र या देर से असफल होंगे। इस क्षेत्र में शान्ति के प्रयास में सबसे बड़ा रोड़ा येरूशलेम शहर है। परमेश्वर ने जकर्याह भविष्यवक्ता के द्वारा येरूशलेम शहर के विषय में कहा कि:



“देखो, मैं येरूशलेम को चारों ओर की सब जातियों के लिये लड़खड़ा देने के मद का कटोरा ठहरा दूँगा; और जब येरूशलेम घेर लिया जाएगा तब यहूदा की दशा भी ऐसी ही होगी। उस समय पृथ्वी की सारी जातियाँ येरूशलेम के विरुद्ध इकट्ठी होंगी, तब मैं उसको इतना भारी पत्थर बनाऊँगा, कि जो उसको उठाएँगे वे बहुत ही घायल होंगे।” (जकर्याह 12:2-3)

## विचारणीय पद

1- यहजेकेल 36:16-38 को पढ़े।

अ) भविष्यवाणी के उस भाग को लिखिए जो पूरी हो चुकी है।

ब) भविष्यवाणी के उस भाग को लिखिए जो पूरी नहीं हुयी है।

स) यहजेकेल के 37 वें अध्याय में वर्णित सूखी हड्डियों की भविष्यवाणी से आपकी उपरोक्त दोनों बातें किस तरह से मेल खाती है?

2- यहां इस्राएल के विषय में कुछ अन्य भविष्यवाणियां हैं। इन पर विचार किजिये कि क्या ये पूरी हो चुकी है, यदि नहीं तो वे कब पूरी होंगी?

- भजन संहिता 83

- जकर्याह 13:8-9; 14:1-5

- योएल 3:1-17

- लूका 21:20-24

- मीका 4:9-13

3- यशायाह 19:23-25 को पढ़े। मध्यपूर्व क्षेत्र में शान्ति स्थापित करने के लिए यहां क्या सलाह दी गयी है?

## अन्य खोज

1. इस बात को खोजिये कि 1967 के “छः दिन के युद्ध” में क्या हुआ। जब इस्राएल ने येरूशलेम को अपने कब्जे में ले लिया तो कौन सी भविष्यवाणियां पूरी हुयीं?

2. भजन संहिता के 83 अध्याय में उन राष्ट्रों की एक सूची दी गयी है जो इस्राएल को नाश करना चाहते हैं। नक्शे और बाईबल शब्दकोष को प्रयोग करके इन स्थानों के आधुनिक नामों को खोजिये। यह सम्भव है कि ये वे राष्ट्र हो जो यीशु मसीह के पुनः आगमन से पहले येरूशलेम पर आक्रमण करें।

‘इस्राएल से सम्बन्धित भविष्यवाणी’ (Prophecy concerning Israel) is from ‘The Way of Life’,  
edited by Rob J. Hyndman



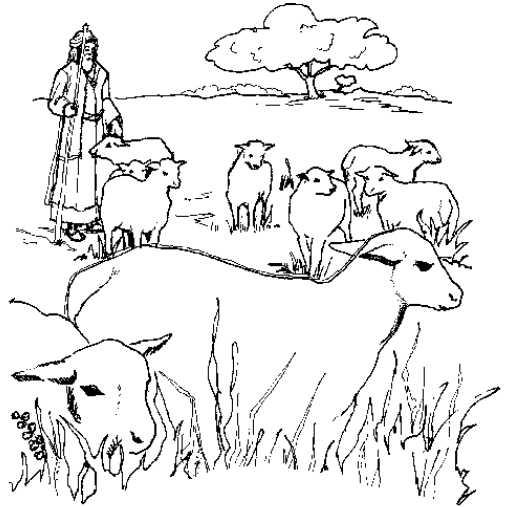
# आप क्या चाहते हैं या आपके लिए क्या आवश्यक है? (1)

## What you need or what you want? (Part 1)

मुख्य अध्याय: भजन संहिता 77

भजनकार कष्ट में है, दुविधा में है और अत्यधिक पीड़ा में है। क्या कभी न बदलने वाला ईश्वर बदल गया है? लेकिन जब वह ईश्वर के पुराने आश्चर्यजनक कार्यों का अवलोकन करता है तो उसको पता चलता है कि ईश्वर के कार्य वास्तव में महान हैं। और यह भी कि ईश्वर हमारा चरवाहा है और हमें ठीक वैसा ही चारा देता है जिसकी हमें आवश्यकता है।

चरवाहा और उसकी भेड़ों का उदाहरण, हमारे लिए ईश्वर के विधान का, सबसे अधिक सम्पूर्ण और अन्योक्तिपरक उदाहरण है। यह एक ऐसा दृश्य है जिसमें बाईबल का हर एक भाग निहित है, उत्पत्ति अध्याय 4 में हाबिल से लेकर प्रकाशितवाक्य अध्याय 22 के मेमने तक। शायद हमने इस विषय पर बहुत अधिक सुना हो या पढ़ा हो, और इन अध्ययनों पर हमारा स्वयं का चिन्तन भी इस ओर संकेत करता हो, और आगे इस सुन्दर दृश्य की ओर हमारा ध्यान केन्द्रित करेगा।



लेकिन आईये मत्ती अध्याय 10 के कुछ पदों की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करें। यहां यीशु अपने चेलों को एक यात्रा पर भेज रहे हैं और उन्हें बताते हैं कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं करना है। हम भी यीशु के चले हैं और एक यात्रा पर हैं तो आईये हम भी इन बातों पर ध्यान दें कि हमें क्या करने की आवश्यकता है?

“अपने पटुकों में न तो सोना, और न रूपा, और न ताँबा रखना; मार्ग के लिए न झोली रखो, न दो कुरते, न जूते और न लाठी लो, क्योंकि मजदूर को उसका भोजन मिलना चाहिए।” (मत्ती 10:9-10)

रूपया-पैसा नहीं, कपड़े नहीं, सहारे या लड़ने के लिए कोई लाठी नहीं, जूते नहीं - यह यात्रा के लिए एक अपर्याप्त शुरुआत है - लेकिन इससे हमें पता चलता है कि इनसे अधिक महत्वपूर्ण कोई चीज है जिसकी हमें आवश्यकता है।

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की यात्रा के लिए हमें रूपये-पैसे की आवश्यकता नहीं है, और न ही हमें कपड़ों की अलमारी की जरूरत है, जो कि हमें रखना पसन्द है। परमेश्वर के राज्य के मार्ग पर चलने के लिए ये सब चीजें असंगत हैं। न तो बिस्तर और न चलने के लिए सहारे के लिए या रक्षा के लिए लाठी लो। यीशु कहते हैं कि आपको इनकी आवश्यकता नहीं है। (एक अन्य सुसमाचार ऐसा बताते हुए प्रतीत होता है कि उन्हें लाठी की आवश्यकता थी - लेकिन शीघ्र ही जाँचने से पता चलता है कि मूल प्रति में ऐसा नहीं है और बहुत से विशेषज्ञ इससे सहमत हैं।) “*तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।*” (भजन संहिता 23:4) जिस सहारे और सुरक्षा की हमें आवश्यकता है वह सब परमेश्वर हमें प्रदान करता है।



हमें इस दुनिया की सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है। मानवीय दृष्टिकोण से पैसे से सुरक्षा मिलती है और हम भी इस सोच से अछूते नहीं हैं। लेकिन यीशु मसीह सुनिश्चित करते हैं कि, न सोना, न चाँदी, न ताँबा, सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं। जिस एक मात्र सच्चे परमेश्वर के लिए वे काम कर रहे हैं उनको केवल और केवल उसी एकमात्र पर निर्भर रहना था।

20 वीं शताब्दी भौतिकवाद का एक युग है। प्रेरित कहता है कि,

“और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो, तो इन्ही पर सन्तोष करना चाहिए।” (1 तिमोथियुस 6:8)

निम्न पद में क्या ही अच्छी सलाह वह हमें देता है:

“पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डूबा देती हैं। क्योंकि रूपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की

जड़ हैं, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।”

(1 तिमथियुस 6:9-10)

हम हमेशा सोचते हैं कि थोड़ा और, थोड़ा और। हम कभी सन्तुष्ट नहीं होते और हमेशा सन्तुष्ट होने के लिए एक और चीज चाहिये होती है।

“तू इन बातों से भाग, और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा करा।”

(1 तिमथियुस 6:11)

सोना नहीं, चाँदी नहीं, कपड़े नहीं। हमें आवश्यकता है धार्मिकता, भक्तिपूर्ण सेवा, विश्वास और प्रेम की। हमें लाठी की आवश्यकता नहीं है - हम ऐसी लड़ाई नहीं लड़ते हैं। हम जीवन को बचाने के लिए विश्वास की भूख की लड़ाई लड़ते हैं।

इस सब बातों का वास्तविक सन्देश और दृष्टिकोण पद 17 में है,

“चंचल धन पर आशा न रखें।”

(1 तिमथियुस 6:17)



पैसे की ताकत का घमण्ड मत करो। पैसे की दुनिया में “सुरक्षा” की बातें होती हैं और सुरक्षा का व्यापार होता है। इन चीजों में वास्तविक सुरक्षा नहीं है। चल या अचल सम्पत्ति हमें सुरक्षा नहीं दे सकती है। अनिश्चित धन पर भरोसा न रखें। उस ईश्वर पर भरोसा रखें जो सब कुछ देता है। उस की अराधना करें और भरोसा रखें जो देने वाला है ना कि उस पर जो दिया गया है। ऐसी किसी चीज पर भरोसा ना रखें जिसकी सृष्टि की गयी है बल्कि सब कुछ रचने वाले पर भरोसा रखें। नष्ट होने वाली चीजें नहीं बल्कि आने वाले युग के लिए विश्वास की एक अच्छी नींव रखें।

पौलुस, यीशु मसीह, ईश्वर, सब हमें बताते हैं कि हमारी आवश्यकता भौतिक चीजें नहीं हैं। भौतिक चीजें हमारे पास हो भी सकती हैं और नहीं भी लेकिन हमें जिसकी आवश्यकता है वह है भक्ति और विश्वास।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं और ईश्वर हमसे प्रेम करता है और वह चाहता है कि हम जो कुछ अपने लिये या दूसरों के लिए चाहते हैं उसके विषय में हम उससे बातें करें।

बहुत से लोग जो यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं उनकी प्रार्थनाएँ पूरी हो जाती हैं। बहुतों ने आखों की रोशनी के लिए यीशु से प्रार्थना की और उन्हें आखों की रोशनी मिल गयी, लेकिन हो सकता है कि जिन्हें आखों की रोशनी पाने की इच्छा है पिता उनको वह ना दें। हो सकता है कि ईश्वर आत्मिक आखों की रोशनी देने के लिए भौतिक आखों की रोशनी ले लें।

हम अपनी इच्छाओं के अनुसार ईश्वर से प्रार्थना करते हैं - ईश्वर हमारी आवश्यकताओं के अनुसार हमें प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। प्रेरितों के काम के 27 अध्याय में पौलुस उन लोगों की रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है जो उसके साथ जहाज में थे। *“मत डर ... परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है।”* (प्रेरितों के काम 27:24) पौलुस ने अपने लिये और दूसरों के लिए प्रार्थना की। परमेश्वर चाहता है कि हम उससे प्रार्थना करें। यहां जो “देना” शब्द आया है (और लूका 7:21 में आंखें देने के विषय में जो “देना” शब्द आया है) वह ईश्वर की कृपा है उसका अनुग्रह है जो उसने दिया है, ईश्वर के अनुग्रह के रूप में आंखें दी गयीं; पौलुस के साथ यात्रा करने वालों को बचाने के लिए ईश्वर के द्वारा अनुग्रह प्रदान किया गया।

किस आधार पर ईश्वर हमारी इस तरह की प्रार्थनाओं को सुनता है? लूका 11:9-13, *“माँगो ... ढूँढो ... खटखटाओ”* वाले पद, जिनको हम इससे पहले मत्ती में भी पढ़ते हैं, हमें बताते हैं कि किस आधार पर हमारी प्रार्थनायें सुनी जाती हैं। ऐसा लगता है कि यह एक कम्बल के विषय में है, लेकिन हमने देखा कि सम्पूर्ण प्रतिज्ञा मत्ती में कही गयी “भली बातों” पर आकर टिकती है। लूका यहां बता रहा है कि ईश्वर “पवित्र आत्मा” दे रहा है, जिसको ए.डी. नोरीस ने “आत्मा की पवित्रता” अनुवादित किया। इसलिए यहां फिर से भौतिक चीजों पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया गया है। यदि हम सम्पूर्ण सच्चाई से और अधिक आत्मिक, और अधिक पवित्र, बनने के लिए ‘ढूँढ़ें’, ‘माँगें’, और ‘खटखटाये’ तो इस दिशा में की गयी हमारी प्रार्थनायें सुनी जायेगी और ऊपर पिता की ओर से एक प्रतिध्वनि हमें मिलेगी कि ‘हां, आमीन!’

ईश्वर अच्छे उपहारों को रोक कर नहीं रखता वह उन्हें हमें देता है। हम ईश्वर के बच्चे हैं। जैसे हमारे बच्चे बहुत सी चीजें हमसे मांगते हैं लेकिन हम वे सब उन्हें नहीं देते हैं। क्योंकि कुछ चीजों की आवश्यकता नहीं होती, कुछ चीजें असंगत होती हैं, जबकि कुछ चीजें गलत और खतरनाक होती



है। वैसे ही ईश्वर भी करता है क्योंकि हम उसके बच्चे हैं। हमें अपने बच्चों के लिए अच्छी चीजें या उपहार निर्धारित करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए (यीशु ने भी ऐसा ही कहा), यद्यपि हम हमेशा बिल्कुल ठीक नहीं हो सकते हैं। इसके विपरीत हमारा पिता हमेशा सही होता है और हमारे और हमारी प्रार्थनाओं के विषय में हमेशा सही और उचित निर्णय लेता है।

लूका के 11 अध्याय में दिया गया दृष्टान्त इसी विषय से सम्बन्धित है।

“तब उसने उनसे कहा, ‘तुम में से कौन है कि उसका एक मित्र हो, और वह आधी रात को उसके पास जाकर उससे कहे, “हे मित्र; मुझे तीन रोटियाँ दे। क्योंकि एक यात्री मित्र मेरे पास आया है, और उसके आगे रखने के लिये मेरे पास कुछ नहीं है।” और वह भीतर से उत्तर दे, “मुझे दुःख न दे; अब तो द्वार बन्द है और मेरे बालक मेरे पास बिछौने पर हैं, इसलिये मैं उठकर तुझे दे नहीं सकता?” मैं तुम से कहता हूँ, यदि उसका मित्र होने पर भी उसे उठकर न दे, तौभी उसके लज्जा छोड़कर माँगने के कारण उसे जितनी आवश्यकता हो उतनी उठकर देगा।”



(लूका 11:5-8)

यहां मित्र का मतलब है घनिष्ठ मित्र। यह मित्रता आवश्यकता पर निर्भर थी। लेकिन यीशु मसीह ने विशेष रूप से कहा कि मित्र ने मित्रता के आधार पर प्रतिक्रिया नहीं की बल्कि उसने आवश्यकता के आधार पर प्रतिक्रिया की।

ठीक इसी प्रकार ईश्वर भी इस आधार पर कार्य नहीं करता कि हमारे उसके साथ सम्बन्ध कैसे है और इस सम्बन्ध के अनुसार हमें क्या मिलना चाहिये। बल्कि वह इस आधार देता है कि हमें किस चीज की आवश्यकता है। इसलिए हमारे परस्पर सम्बन्ध एक दूसरे की आवश्यकता पर आधारित होने चाहिये।

इस संसार को उसकी आवश्यकता थी - इसलिए ईश्वर ने अपने पुत्र को दिया। अपनी कलिसिया में और अपने पड़ोसी के साथ हमें दिन और रात इसी आधार पर सहायता करनी चाहिये कि उनकी आवश्यकता क्या है न कि इस आधार पर कि हमारे उनके साथ सम्बन्ध कैसे है, और वे हमसे किस तरह की सहायता के योग्य हैं। ईश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध और दिन प्रतिदिन एक दूसरे के साथ हमारे सम्बन्ध के विषय में शिक्षा देने वाला

यह बहुत ही शक्तिशाली दृष्टान्त है।

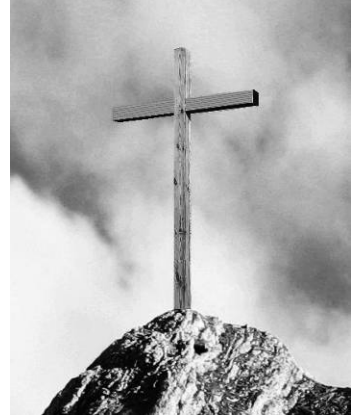
तो इस प्रकार ईश्वर हमें हमारी आवश्यकता के अनुसार देता है। हमारे ना चाहने के बावजूद भी ईश्वर हमें कभी-कभी गहरा दुःख देता है। यदि ईश्वर हमें दुःख देता है तो हमें इसे एक अच्छा उपहार समझकर ग्रहण करना चाहिये। यहां तक कि यीशु मसीह ने भी दुःख उठाकर सीखा -

“उद्धार के कर्ता को दुःख उठाने के द्वारा सिद्ध  
करे।” (इब्रानियों 2:10)

और इब्रानियों 5:8 में हम पढ़ते हैं:

“पुत्र होने पर भी उसने दुःख उठा-उठाकर आज्ञा  
माननी सीखी।”

तो यदि यीशु मसीह को इन दुःखों की आवश्यकता थी तो हमें कितनी अधिक होगी।



यही बात दाऊद भी भजन संहिता 119:67, 71, 75 में कहता है। यह ईश्वर भक्त व्यक्ति कहता है कि,

“उससे पहले कि मैं दुःखित हुआ, में भटकता था; परन्तु अब मैं तेरे वचन को  
मानता हूँ।” (भजन संहिता 119:67)

और पद 71 में वह कहता है कि,

“मुझे जो दुःख हुआ वह मेरे लिये भला ही हुआ है।” (भजन संहिता 119:71)

पद 75 में वह कहता है कि उसके लिये दुःख परमेश्वर पर विश्वास का प्रमाण है।

ईश्वर अपने कार्य को पूरा करेगा और इसलिए वह विश्वास के साथ हमारे जीवन में कार्य कर रहा है - यह इस बात का प्रमाण है कि वह हमारा पिता है और वह हमसे प्यार करता है।

“क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता हैं, और जिसे पुत्र  
बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता हैं।” (इब्रानियों 12:6)

ईश्वर ऐसा क्यों करता है? इब्रानियों 12 अध्याय का पद 11 बताता है कि वह ऐसा इसलिए करता है ताकि हम इसके द्वारा अभ्यस्त हो जाये। दुःख पिता के हाथ में एक ऐसा

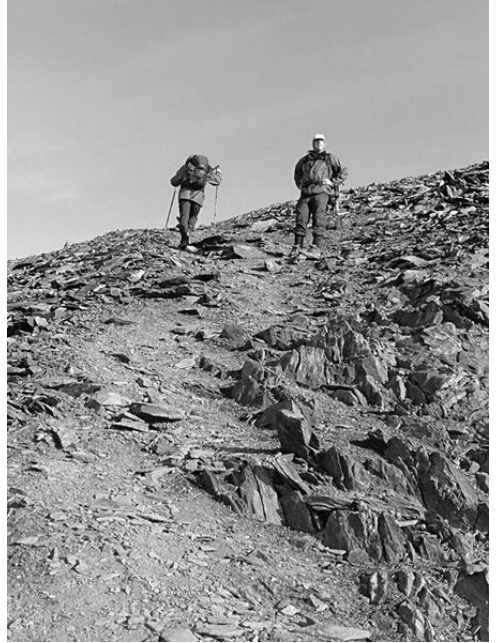
औजार है जिसको हम नहीं चाहते हैं; लेकिन प्रार्थना करते हैं कि हम यीशु के जैसे बन जायें और इसलिए हम इस दुःख को प्राप्त करते हैं। “ईश्वरीय दुःख” – मनफिराव को लाता है। जबकि इस संसार का दुःख, चिन्ता और उदासी को लाता है। लेकिन ईश्वर का दुःख शक्ति प्रदान करने वाला है,

“इसलिए ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो।” (इब्रानियों 12:12)

और एक बुद्धिमान व्यक्ति लिखता है कि, “यह बड़े दुख का काम है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उस में लगे।” (सभोपदेशक 1:13)

और फिर “हँसी से खेद उत्तम है, क्योंकि मुँह पर के शोक से मन सुधरता है।” (सभोपदेशक 7:3)

दुःख, कष्ट और संघर्ष वे चीजें नहीं हैं जो हम ईश्वर से चाहते हैं लेकिन तो भी ये चीजें हमें उसी ओर ले जाती हैं जो हम चाहते हैं और वह है – परमेश्वर का राज्य। हम परमेश्वर के राज्य तक जाने वाले सबसे अच्छे मार्ग को नहीं जानते लेकिन ईश्वर जानता है इसलिए वह हमें अपने समतल या ऊबड़-खाबड़ रास्तों से लेकर जाता है। ईश्वर विश्वासयोग्य है कि वह हमें अपने राज्य में ले जाने के लिए हर एक आवश्यक कार्य करता है। और यदि इसके लिए हमें अपने जीवन की सबसे प्यारी चीज को त्यागना आवश्यक है तो वह इसको हमसे ले लेगा ताकि हम उसके राज्य में जा सकें। आखिरकार उसने अपना इकलौता प्रिय पुत्र दे दिया। क्यों? ताकि हम नाश ना हो और ताकि हम उसके राज्य में प्रवेश कर सकें। जो हमारे लिये सबसे मूल्यवान और महिमामय उपहार है।



‘आप क्या चाहते हैं या आपके लिए क्या आवश्यक है?’ (1) (What you need or what you want? Part 1) is from ‘Caution! God at work’, by Tim Galbraith

कृपया निःशुल्क हिन्दी पुस्तिका “इस्त्राएल और परमेश्वर का अददेश्य” और हिन्दी बाईबल पत्राचार पाठयक्रम हेतू हमारे निम्न पते पर सम्पर्क करें --

"दीपक" पत्रिका और अन्य पुस्तिकाओं हेतू पता:

दि क्रिस्टडेलफियन

पो. बा. न. - 10, मुजफ्फरनगर (यूपी) - 251002

ई-मेल: cdelph\_mzn@yahoo.in

पत्राचार पाठयक्रम हेतू पता:

दि क्रिस्टडेलफियन

पो. बा. न. - 50, गाजियाबाद (यूपी) - 201001

ई-मेल: christadelphiansdelhi@gmail.com

Visit us at - [www.christadelphians.in](http://www.christadelphians.in)

Printed Book

To,

केवल व्यक्तिगत वितरण हेतू